सविता सिंह

बक्सर, बिहारी

मैं ना बनी कुंती

सुबह सवा चार बजे मोबाइल में सेट अलार्म ने गाना शुरू किया ।बंद अलसाई आंखों को जबरन खोलने की कोशिश करती पूजा बगल में सोए सात साल की बेटी को पुचकार कर जगाती हुई लंच बॉक्स की तैयारी की योजना बना लेती है । नींद भरी आंखों को भींचकर काव्या कहती है थोड़ी देर और सोने दो न मां। और स्कूल से आके सो लेना बेटा। बेटी को यूनिफॉर्म पहनाती, लंच बॉक्स पैक करती पूजा की नजर बार बार घड़ी पे चली जाती है कि कभी वक्त उस से तेज रफ्तार से न निकल जाए।

काव्या के साथ साथ खुद भी तैयार हो कर समय से काम पर जाने की जद्दोजेहद अब आदत बन चुकी थी।

स्कूल बस में बैठी काव्या प्यारी सी स्माइल के साथ मां को बाय करती तो पूजा की सारी थकान उतर जाती ।एक नई ऊर्जा के साथ वो अपने गंतव्य पे निकल पड़ती।

ट्रेनिंग कॉलेज में लेक्चरर की भूमिका में पूजा वहां पढ़ रहे कई युवा बच्चों की आइडियल लेडी थी। क्लास रूम में मुखर वक्ता पूजा की आवाज सम्मोहित करने वाली थी । चेहरे का न्यूड मेकअप लुक उनकी सौम्यता को चार चांद लगा देता था। शान्त ,गंभीर पूजा मैम अभिवादन के प्रतिउत्तर में मुस्कुरा देती तो बच्चों का जैसे दिन बन जाता। बेहद कॉन्फिडेंट दिखने वाली पूजा मैम अंदर से कितनी बिखरी हुई है कोई भी न जान पाता कभी भी । अगर ये वाकया न हुआ होता ।काव्या के स्कूल से आए एक फॉर्म पर पिता के नाम वाले कॉलम को खाली छोड़ कर जमा करने की वजह से काव्या को ओलंपियार्ड में भाग नहीं लेने दिया गया ।वो सीधे स्कूल की प्रिंसिपल के ऑफिस में पहुंची । और बेटी को एग्जाम में बैठने देने की रिक्वेस्ट करने लगी ।लेकिन प्रिंसिपल का कहना था कि पिता के नाम का कॉलम खाली सम्मिट नहीं किया जा सकता ,जबतक कोई ठोस कारण नही दिया जाएगा। मजबूरन अपनी बेटी के उज्ज्वल भविष्य के लिए पूजा को अपनी जिंदगी का बिखराव मिसेज रॉय (प्रिंसिपल) के सामने रखना पड़ा ।अपनी दर्द भरी कहानी कहती पूजा की आंखे लगातार बरस रही थीं,मिसेज रॉय की आंखों में भी दर्द और सहानुभूति आंसू बनके उभर आए। कितने खुश थे पूजा और अमर एक दूसरे के साथ ,विवाह की तारीख तय हो चुकी थी ।विवाह से पहले अमर को ज्वाइन करना पड़ा , इंडियन आर्मी । सेकंड लेफ्टिनेंट । शादी से पहले लम्बी छुट्टी लेके आने के लिए। जाने से पहले वो पूजा से साथ अच्छे से वक्त बिता कर जाना चाहता था ।ऐसी ही एक साम प्रेम के अतिरेक में,भावनाओं का प्रवाह ही उन्हें बहा ले गया।

जाते वक्त अमर ने पूजा को गले लगा के कहा बस यूं गया और यूं आया ,फिर धूमधाम से ले जाऊंगा अपनी दुल्हन।,पूजा भीगी आंखों से मुस्कुराती देखती रही ।प्लेन हवा से बाते करने लगा।कुछ ही मिनटों बाद एक दर्दनाक खबर ने पूरे शहर को हिला दिया ।प्लेन क्रैश होने की

खबर ने पूरे शहर को हिला दिया ।प्लेन क्रैश होने की खबर ,सभी यात्रियों के मारे जाने की खबर। पूजा की तो दुनिया ही लुट गई। इस सदमे की वजह से वो एकदम टूट गई ,चुप खामोश शून्य में देखती रहती ।समय कहा रुकता है किसी के आने जाने से वो अपनी रफ्तार से बीतता रहता है । इसी दौरान पूजा को अपने प्रेग्नेंसी के बारे में पता चला और उस दिन वो फूट फूट कर रोती रही।उसे समझ नहीं आ रहा था कि नियति क्यूं खेल रही है उसके साथ ।मां ,पापा अबॉर्शन के लिए समझाते तो एकदम से बिफर पड़ती । निर्णय लेना कितना कठिन होता है उस दिन समझ आया ।फिर भी अपने इरादों को समेटकर निर्णय लिया पूजा ने की बच्चे को जन्म देगी और पालेगी भी । इस निर्णय से सभी सन्न रह गये । अपने मां बाप के साथ साथ अमर के पापा भी इसके खिलाफ ये । समाज का डर बेटी के प्रेम से बड़ा वन गया ।अपनों ने ही मुंह फेर लिया। हर तरफ से हताश निराश ,कहा जाती अकेली। ऐसे में साथ दिया उसकी दाई मां ने जिन्होंने उसे पाला था । अब काव्या की नानी मां बन गई ।पांच साल तक वो अपनी बेटी को उनके साथ रहकर पालती रही । ईश्वर ने उनका साथ भी छीन लिया । वक्त सबसे बड़ा गुरु होता है सबकुछ सिखा देता है । दो साल हो गए पूजा को हिसार से लखनऊ आये।अपनी बेटी के उज्ज्वल भविष्य के लिए ,आज फिर एक निर्णय लेने की बारी थी ।और वो निर्णय था काव्या को पिता का नाम देने का निर्णय । अपने प्रेम की आखिरी निशानी को नाम देने का निर्णय ।

कानून और समाज भले इस रिश्ते को ना स्वीकृति दे । लेकिन पूजा और अमर ने एक दूसरे को पतिपत्नी मान लिया था । एक महीने भी तो नहीं बचे थे शादी होने में । शादी के बाद ये दुर्घटना हुई होती तो आज पूजा लेफ्टिनेंट अमर की वीरवधु होती ।और सारे अधिकार मिलते काव्या को ।वो लेफ्टिनेंट अमर सिन्हा की बेटी होती । गर्व से अपने पिता का नाम लेती । तो आज क्यों नहीं ,उसने अपने आंसू पोंछ कर खुद को संयत किया । प्रिंसिपल रॉय में कलम पूजा को देते हुए उसके द्वारा लिए निर्णय का समर्थन किया। पूजा ने फॉर्म के उस कॉलम को पूरा किया फादर्स नेम—लेट लेफ्टिनेंट अमर सिन्हा ।।